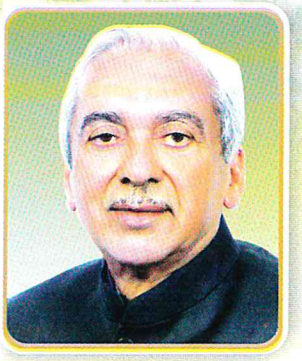
Padma Shri



Prof. Jagmohan Singh Rajput

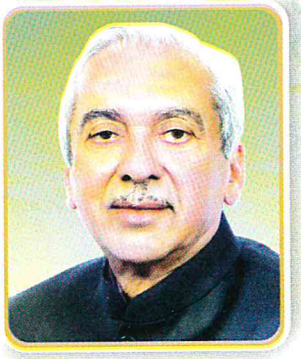
Prof. Jagmohan Singh Rajput is known for his contributions in reforms in school education and teacher education. His researches, innovations and publications are widely known. Several of these have led major reforms in teacher preparation courses and curriculum changes in school education.

2. Born on July 8, 1943, Professor Jagmohan Singh Rajput obtained his Doctorate degree in Physics from the University of Allahabad. Selected as full Professor in 1974 at the age of 31 years, he served as the Principal, of the Regional Institute of Education, Bhopal (1977-88), Joint Educational Adviser (Joint Secretary), Ministry of Human Resource Development, Government of lndia (1989-94), Chairman, National Council for Teacher Education, NCTE, (1994-99) and the Director of the NCERT (1999-2004). During 1990-92, he also served as the Chairperson of the National Bal Bhawan Society of India.

3. As Chairman of the NCTE, Professor Rajput chaired the group that prepared the National Curriculum Framework for Quality Teacher Education in 1998. lt suggested major changes in teacher preparation. For the first time, he introduced two-year B.Ed courses in the Regional institutes of the NCERT. One of the major recommendations to extend the duration of Teacher preparation Courses has now been accepted for implementation at national level. The 'National Curriculum Framework for School Education- 2000', prepared under his chairmanship, recommended that children be made aware of the basics of all religions and further, that they should know the commonalities and learn to respect differences wherever these exist. Subsequently around 250 Textbooks and Resource materials were prepared and published by the NCERT. Another major contribution came on July 13, 2004 when the 'Curriculum Framework for Environmental Education' as an independent subject in school education, prepared under his guidance and Chairmanship, was approved for implementation by the Supreme Court of lndia; after being endorsed by every State and UT. During the period Professor Rajput headed institutions, he regularly published learned papers and books. Further, he got resource materials prepared and published for the teachers and teacher educators.

4. After demitting office on July 13, 2004, Professor Rajput devotes his time to writing, lecturing and providing professional inputs on educational aspects. He has coauthored a book in Hindi on curricular concerns in an ageing society entitled "Shiksha Me Mulyou ke Sarokar" for the 'Help Age lndia' and also published 'Seven Social Sins' and 'Education of Muslims in India'.

5. Professor Rajput's association with UNESCO and other international agencies extends over several decades. UNESCO acknowledged his contributions by selecting him for the Prestigious lan Amos Comenius Medal for' outstanding contributions in research and innovations' in the year 2004.He has also been awarded 'Maharishi Ved Vyas National Award' by the Govemment of MP for his lifelong contributions in Education. Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth Varanasi conferred the degree of Doctors Of letter in acknowledgement of his contributions.



प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत

प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत को स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में सुधार करने के आपके योगदान के लिए जाना जाता है। आपके अनुसंधानों, नवोन्मेषों और प्रकाशनों को व्यापक रूप से जाना जाता है। इनके कारण अध्यापक की तैयारी के पाठ्यक्रमों में अधिक सुधार करने और स्कूली शिक्षा पाठ्यचर्या में परिवर्तन लाने में सहायता मिली है।

2. आपका जन्म जुलाई 08, 1943 को हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। वर्ष, 1974 में 31 वर्ष की आयु में प्रोफेसर के रूप में चुने जाने पर आपने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के प्रधानाचार्य (1977-88), संयुक्त शिक्षा सलाहकार (संयुक्त सचिव), मानव संसाधन विकास-मंत्रालय, भारत-सरकार (1989-94), अध्यक्ष, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, एन सी टी ई (1994-99) और एन सी ई आर टी के निदेशक (1999-2004) के रूप में कार्य किया। 1990-92 के दौरान, आपने भारतीय राष्ट्रीय बाल भवन सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

3. एन सी टी ई के अध्यक्ष के रूप में आपने वर्ष, 1998 में उस ग्रुप की अध्यक्षता की जिसने गुणवत्ता अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क तैयार किया। इसने अध्यापक की तैयारी के लिए बड़े परिवर्तनों का सुझाव दिया। पहली बार आपने एन सी ई आर टी के क्षेत्रीय संस्थानों में दो-वर्षीय बी.एड पाठ्यक्रम शुरू किया। अध्यापक तैयारी पाठ्यक्रमों की अवधि बढ़ाने संबंधी मुख्य सिफारिशों में से एक को अब राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वित करने के लिए स्वीकार किया गया है। आपकी अध्यक्षता में तैयार किए गए 'स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क-2000' में सिफारिश की गई है कि बच्चों को सभी धर्मों की बुनियादी बातें बताई जाएं और इसके अलावा उन्हें यह जानकारी होनी चाहिए कि उनमें क्या समानताएं हैं और जहां कहीं उनमें विभेद हों तो उन्हें उनका सम्मान करना सीखना चाहिए। तदनुसार एन सी ई आर टी द्वारा लगभग 250 पाठ्य पुस्तकें और संसाधन सामग्री तैयार की गई तथा उसे प्रकाशित किया गया। दूसरा मुख्य योगदान जुलाई 13, 2004 में सामने आया जब आपके मार्गदर्शन और अध्यक्षता में स्कूली शिक्षा में स्वतंत्र विषय के रूप में 'पर्यावरण शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क' तैयार किया गया और प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र द्वारा इसे स्वीकृत किए जाने के बाद इसे भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा कार्यान्वयन के लिए अनुमोदित किया गया। इस अवधि के दौरान आपने कई संस्थानों की अध्यक्षता की, आपने नियमित रूप से शिक्षाप्रद दस्तावेज़ और पुस्तकें प्रकाशित कीं। इसके अलावा, आपने शिक्षकों और शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए संसाधन सामग्री तैयार करवाई और प्रकाशित करवाई।

4. जुलाई 13, 2004 में पद त्याग के बाद आपने शिक्षा संबंधी पहलुओं पर लिखने, व्याख्यान देने और पेशेवर जानकारी देने में अपना समय लगाया। आपने समाज के वृद्ध लोगों की दिनचर्या के बारे में 'हैल्प एज इण्डिया' के लिए "शिक्षा में मूल्यों के सरोकार" शीर्षक से हिंदी में एक पुस्तक का सह लेखन किया तथा साथ ही 'सेवन सोशल सिन्स" और "एजुकेशन ऑव मुस्लिम इन इण्डिया" भी प्रकाशित की।

5. आपका यूनेस्को और अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ काफी लम्बा साथ रहा है। यूनेस्को ने अनुसंधान और नवोन्मेषों में आपके उत्कृष्ट योगदानों के लिए वर्ष, 2004 में प्रतिष्ठित जैन अमोस कामनियस मैडल के लिए आपका चयन कर आपके योगदानों को मान्यता प्रदान की है। शिक्षा में आपके आजीवन योगदान के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आपको 'महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय पुरस्कार' भी प्रदान किया गया। आपके योगदानों को मान्यता देने के लिए महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने आपको डॉक्टर्स ऑव लैटर प्रदान किया।